प्रश्न 5. साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं? [CBSE]

उत्तर–साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने निम्नलिखित युक्तियाँ अपनाईं–

- उसने मुट्ठीभर मिट्टी फेंककर साँप का ध्यान उधर लगा दिया।
- उसने अपने हाथ का प्रहार करने की बजाय उसकी तरफ डंडा बढ़ा दिया, जिससे साँप ने सारा विष डंडे पर उगल दिया।

प्रश्न 6. कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए। [CBSE]

अथवा

चिट्ठियों को कुएँ से निकालना मौत का सामना करना था। **कैसे? स्पष्ट कीजिए।** [CBSE]

उत्तर–लेखक अभी ग्यारह वर्ष का किशोर था। उसका आठ वर्षीय भाई उसके साथ था। उसकी ज़रूरी चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गईं। कुएँ में एक साँप था। लेखक ने संकल्प किया कि वह साँप को मारकर चिट्ठियाँ बाहर निकाल लाएगा। उसने अपनी तथा भाई की धोतियाँ बाँधकर तथा कुछ रस्सी बाँधकर कुएँ के धरातल तक जाने का निश्चय किया। उसने ऊपरी हिस्सा चरस के डेंग के साथ लपेटकर छोटे भाई को पकड़ाया और स्वयं लटकन के सहारे कुएँ में उतर गया।

धरती पर पहुँचने से चार-पाँच फुट पहले उसने देखा कि साँप फन फैलाए फुँफकार रहा है। उसने अपने पाँव कुएँ की बगल में लगा दिए। इससे मिट्टी नीचे गिरी। साँप फुँफकार उठा। धीरे-धीरे लेखक नीचे जाकर खड़ा हो गया। सामने साँप फन उठाए खड़ा था। चिट्ठियाँ उसके पास सटी पड़ी थीं। उसने धीरे-धीरे डंडा चिट्ठियों की तरफ सरकाया। जब डंडा चिट्ठी तक पहुँच गया तो साँप ने जोर से डंडे पर वार किया। उसने एक-पर-एक तीन वार किए। डंडे पर पीव-सा आ गया। लेखक ने डर के मारे डंडा छोड़ दिया।

अब साँप और लेखक फिर आमने-सामने थे। डंडा नीचे गिरा पड़ा था। लेखक ने मुट्ठीभर मिट्टी दाईं ओर फेंकी। साँप उधर झपटा। लेखक ने बाईं ओर से डंडा उठा लिया। अब साँप बाईं ओर झपटा। किंतु डंडे ने बीच में आकर रक्षा कर ली। इसी बीच लेखक ने नीचे से चिट्ठियाँ उठा लीं और धोती में बाँध दी। अब बाहर आना आसान था। लेखक जैसे-तैसे 36 फुट ऊँची रस्सी पर केवल हाथों के सहारे चढ़ गया।

प्रश्न 7. इस पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है? [CBSE]

अथवा

बच्चे किस प्रकार की शरारतों में आनंद लेते हैं? [CBSE 2012]

उत्तर–बालक प्रायः शरारती होते हैं। उन्हें छेड़छाड़ करने में आनंद मिलता है। यदि उनकी छेड़छाड़ से कोई हलचल होती हो तो वे उसमें बहुत मज़ा लेते हैं। साँप को व्यर्थ में ही फुँफकारते देखकर वे बड़े खुश होते हैं।

बालकों को प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण में विहार करने में भी असीम आनंद मिलता है। वे झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खाते हैं तथा मन में आनंदित होते हैं। वे आम के पेड़ पर चढ़कर डंडे से आम तोड़कर खाने में खूब आनंद लेते हैं।

प्रश्न 8. *'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं'*–का आशय स्पष्ट कीजिए। [CBSE]

उत्तर–कभी-कभी मनुष्य घर में बैठे-बैठे मन-ही-मन कुछ कल्पनाएँ करता है। उन्हीं कल्पनाओं के आधार पर वह भविष्य की योजनाएँ भी बना लेता है। परंतु वे सभी योजनाएँ और कल्पनाएँ सही नहीं निकलतीं। बल्कि स्थितियाँ कल्पना और योजना के बिलकुल विपरीत निकलती हैं। लेखक ने सोचा था कि वह डंडा उठाकर कुएँ में जाएगा और साँप को मारकर चिट्ठियाँ निकाल लाएगा। उसने इस काम को बाएँ हाथ का खेल माना। परंतु जब उसने फन फैलाए फुँफकारते साँप को देखा तो उसकी सारी योजनाएँ और कल्पनाएँ धरी की धरी रह गईं।

प्रश्न 9. *'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है'*–पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [CBSE]

उत्तर–लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के लिए कुएँ में उतरने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इस दृढ़ निश्चय के सामने फल की चिंता समाप्त हो गई। उसे लगा कि कुएँ में उतरने तथा साँप से लड़ने का फल क्या होगा, यह सोचना उसका काम नहीं है। परिणाम तो प्रभु-इच्छा पर निर्भर है। इसलिए वह फल की चिंता छोड़कर कुएँ में घुस गया।

सजल नेत्र–गीले नेत्र, आँसू-भरे नेत्र। डैने–पंख।

III. पाठ्य-पुस्तक के बोध-प्रश्न

(पृष्ठ 17)

प्रश्न 1. भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?

उत्तर–भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक डर गया था। उसे लगा कि उसके बड़े भाई झरबेरी में के तोड़-तोड़कर खाने के लिए डाँटेंगे और उसे खूब पीटेंगे।

प्रश्न 2. मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?

[CBSE]

उत्तर–मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला अवश्य फेंकती थी। बच्चे जानते थे कि उस कुएँ में एक साँप गिरा हुआ था। जब उस पर ढेले की चोट पड़ती थी तो वह क्रोध के मारे फुसकार उठता था। उस फुसकार से बच्चों को खूब आनंद मिलता था। इसलिए वे आते-जाते कुएँ में ढेला अवश्य फेंकते थे।

प्रश्न 3. *'साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं'*–यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

उत्तर–यह कथन लेखक की बदहवास मनोदशा को स्पष्ट करता है। जैसे ही लेखक ने टोपी उतारकर कुएँ में ढेला फेंका, उसकी ज़रूरी चिट्ठियाँ कुएँ में जा गिरीं। उन्हें कुएँ में गिरता देखकर वह भौंचक्का रह गया। उसका ध्यान चिट्ठियों को बचाने में लग गया। वह यह देखना भूल गया कि साँप को ढेला लगा या नहीं और वह फुसकारा या नहीं।

प्रश्न 4. किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया? [CBSE]

उत्तर–लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय निम्न कारणों से किया–

- वह अपने बड़े भाई की भीषण पिटाई की कल्पना करके डर गया था।
- उसे झूठ बोलना नहीं आता था।
- उसे भरोसा था कि वह डंडे के प्रहार से साँप को मार डालेगा। उसने पहले भी अनेक साँप मारे थे।